IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

गोपालगंज जिले में साक्षरता एवं शिक्षा

धन्नजय कुमार सिंह

भूगोल विभाग,

जयप्रकाश विश्वविद्यालय, छपरा

साक्षरता को परिभाषित करना बहुत ही कठिन है, क्योंकि विश्व के अलग – अलग देशों में इसके निर्धारण में अलग – अलग मानदण्ड प्रयोग में लाए जाते हैं। जिस कारण विश्व स्तर पर साक्षरता की तुलना करने में कठिनाई होती है, जैसे 1930 में फिनलैण्ड में जो कठिन प्रश्नों को हल कर सके उन्हें साक्षर कहा गया। वहीं संयुक्तराष्ट्र संघ जनसंख्या आयोग ने साक्षर की परिभाषा दी। जिसको अधिकांश राष्ट्र मानने लगे। किसी भाषा में एक साधारण संदेश को पढने और लिखने की क्षमता रखने वाले व्यक्ति को साक्षर कहा गया है।

1951 में जब भारत में जनगणना हुई तो उस समय 4 वर्ष से ऊपर आयु वाले व्यक्ति को साक्षर माना गया जो कम से कम किसी भी एक भाषा में साधारण पत्र पढ या लिख सकता था। लेकिन भारत में यह परिभाषा ज्यादा दिनों तक मान्य नहीं रही और 1991 की जनगणना के अनुसार जो किसी एक भाषा में एक पत्र को समझकर लिख या पढ सकता है और उसकी आयु कम से कम 7 वर्ष या उससे अधिक की हो, उसे ही साक्षर माना गया।

किसी भी देश में आर्थिक सामाजिक और सांस्कृतिक विकास के लिए वहां की निरक्षरता एवं अशिक्षित जनसंख्या बाधक होती है लेकिन देश की सामाजिक और आर्थिक विकास तभी संभव है जब वहां की जनता साक्षर एवं शिक्षित हो। संयुक्तराष्ट्र संघ ने औपचारिक शिक्षा को तीन भागों में बाँटा – प्रथम स्तरपर प्रारंभिक शिक्षा या उसके समकक्ष, द्वितीय स्तरपर मध्य विद्यालय, उच्च विद्यालय, अध्यापक प्रशिक्षण विद्यालय, वोकेशनल विद्यालय या उसके समकक्ष तथा तृतीय स्तर पर प्रशिक्षण महाविद्यालय, व्यवसायिक महाविद्यालय एवं उसके समकक्ष।

डेविस किंगसले के अनुसार भावी आर्थिक विकास एवं साक्षरता विसरण के बीच हमेशा उच्च धनात्मक सहसंबंध देखने को मिलते हैं। देश के भावी आर्थिक विकास में साक्षरता प्रसार की न्यून दर बाधक तथा उसकी उच्च दर वरदान सिद्ध होती है। साक्षर व्यक्तियों की संख्या में कुल जनसंख्या से विभाजित एवं 100 से

गुणाकर प्राप्त किया जाता है उसे साक्षरता दर कहते हैं। इसका प्रभावित करने वाले अनेका नेक सामाजिक, राजनीतिक एवं आर्थिक कारकों में अर्थव्यवस्था का प्रकार नगरीकरण की सीमा, जीवन निर्वाह का स्तर, महिलाओं की स्थिति तथा जीवन मूल्य निर्णायक महत्व के है।

साक्षरता किसी भी समाज की अतीत की धरोहर होती है। कृषि प्रधान जीवन – निर्वाहक कृषि व्यवस्था में वंशानुगत वृद्धि के साथ जाति – व्यवस्था साक्षरता के प्रसार में एक बाधक कारक है। गोपालगंज जिले में साक्षरता का वर्तमान स्तर सरकारी तथा गैर – सरकारी संगठनों के प्रयासों का प्रतिफल है। इसी प्रयास की एक श्रृंखला का नारा" हर कोई पढाये एक को (Each One Teach One) है।

तलिका– 1

समग्रसाक्षरतादर (प्रतिशत में)

	1991			2001			2011		
	कुल	पुरूष	महिला	कुल	पुरूष	महिला	कुल	पुरूष	महिला
भारत	51.21	64.13	39.29	65.24	75.87	54.13	74.04	82.14	65.46
बिहार	38.54	52.63	23.10	47.53	60.32	33.57	63.82	73.39	53.33
गोपालगंज	34.90	81.62	17.15	48.19	63.81	32.81	67.04	78.38	56.03
Source						Provisional Population Total 2011 of Bihar			

तलिका– 1 से पता चलता है कि राष्ट्रीय स्तर की तुलना में गोपालगंज जिला में इन सभी जनगणना वर्षो में साक्षरता का प्रतिशत कम रहा है, लेकिन राज्य स्तर पर 1991 को छोड़कर 2001 एवं 2011 को छोड़कर 2001 – 2011 में राष्ट्रीय स्तर पर कम एवं राज्य स्तर पर अधिक देखा जा रहा है। गोपालगंज जिले में 2001 में पुरूष साक्षरता दर 63.81 थी। जबकि 2011 प्रतिशत की हुई। महिला साक्षरता दर 2001 में 32.81 थी जबकि 2011 में 56.03 प्रतिशत हो गयी। महिलाओं की साक्षरता दर में जिले में 13.22 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की गयी।

तालिका– 2

गोपालगंज जिले में प्रखण्ड स्तर पर सामान्य साक्षरता का प्रतिशत

क्र0	अंचल	कुल	पुरूष	महिला
1	2	3	4	5
1	कटैया	48.31	64.44	33.12
2	विजयीपुर	44.98	62.02	29.09
3	भोरे	44.67	61.35	28.87
4	पंचदेवरी	42.45	59.66	25.58
5	कुचायकोट	49.54	65.51	33.62
6	फुलवरिया	50.20	66.63	33.83
7	हथुआ	53.66	68.95	38.36
8	उचकागांव	52.15	67.39	36.67
9	थावे	55.09	69.27	40.46
10	गोपालगंज	54.64	67.60	40.72
11	मांझा	47.07	61.42	32.58
12	बरौली	44.65	60.42	30.03
13	सिधवलिया	42.90	59.07	27.16
14	बैकुण्ठपुर	41.33	57.26	26.05
गोपालगंज जिला		48.19	63.81	32.81

तलिका में कुल साक्षरता 48.19 प्रतिशत है जिसमें कटैया (48.31प्रतिशत), कुचायकौट (49.54), फुलवरिया (50.20), हथुआ (53.66 प्रतिशत) एवं उचकागांव (52.15 प्रतिशत) है, जो जिले के प्रतिशत से उच्च साक्षरता दर दर्ज की गयी है एवं जिले के प्रतिशत से निम्न अंचल विजयीपुर, भोरे, पंचदेवरी, पश्चिम के तरफ एवं मांझा, बरौली, सिघवलिया एवं बैकुण्ठपुर पूरब के अंचल है। शहरी क्षेत्रों के पास के अंचलों में साक्षरता दर अधिक है तथा जो दूर हैं उनकी साक्षरता दर कम दर्ज की गयी है।

गोपालगंज जिले में सामानय दर के परिवर्तन का कालिक प्रारूप

शिक्षा के प्रति जनता की जागरूकता में आयी क्रांति सरकारी तथा गैर–सरकारी संगठनों द्वारा किये गये प्रयासों का प्रतिफल है। 1961 की जनगणना के परिणामों के अनुसार जनपद में कुल जनसंख्या का मात्र 14.19 प्रतिशत ही साक्षर था। 1961 के बाद लगातार साक्षरता दर में वृद्धि 1981 (21.36 प्रतिशत), 1991 में (25.25 प्रतिशत), 2001 में (48.19 प्रतिशत) एवं 2011 में (67.04 प्रतिशत) हो गया। यह वृद्धि उच्च से उच्चतर

होता गया जिसमें सरकारी एवं गैर – सरकारी संस्थाओं को प्रभाव का फल माना जा रहा है। अंचलो में साक्षरता का दर तृलनात्मक रूप से 1961 – 81 में उच्चतर था। तालिका – 3 के जनसंक्ष्या अवलोकन के पश्चात यह देखा जा रहा है, कि पुरूषों की जनसंख्या के साक्षरता दर का स्थानिक प्रारूप भी समग्र जनसंख्या की साक्षरता दर के समान ही है।गोपालगंज, मांझा, हथुआ एवं उचकागांव में पुरूषों की साक्षरता दर के क्षेत्रीय औसत से उच्चतर है।

तालिका– 3

सामान्य साक्षरता दर (प्रतिशत में)

क्र0	अंचल	1961	1981	1991	2001
1	गोपालगंज	13.92	23.98	19.02	56.64
2	मांझा	16.46	21.41	27.17	47.07
3	हथुआ	17.20	21.92	28.53	53.66
4	उचकागांव	15.12	24.11	25.08	52.15
5	भोरे	12.84	20.52	27.72	44.67
6	विजयीपुर	12.76	17.95	25.59	44.98
7	कटेया	12.90	21.27	23.60	48.31
8	कुचायकोट	15.62	22.55	29.73	49.54
9	बरौली	14.69	19.79	21.99	44.45
10	बैकुण्ठपुर	12.71	18.44	24.36	41.33
11	पंचदेवरी	–	–	–	42.45
12	फुलवरिया	–	–	–	50.20
13	थावे	–	–	–	55.09
14	सिघवलिया	–	–	–	42.96
गोपालगंज जिला		14.29	21.36	25.25	48.19

स्त्रियों की साक्षरता का स्थानिक प्रारूप विगत में विवेचित उमग्र तथा पुरूष साक्षरता के स्थानिक प्रारूप से भिन्न है। क्षेत्रिय औसत से उच्चतर दर का प्रतिनिधितव मांझा एवं हथुआ शहरों की जनसंख्या करता हे लेकिन गोपालगंज शहर से युक्त उचकागांव अंचल का स्त्री साक्षरता दर (3.91) क्षेत्रीय औसत (4.33) से आगे परिकलित है, बल्कि कुचायकोट (4.19 प्रतिशत) उचचतर स्त्री साक्षरता दर का प्रदर्शन कर रहें हैं।

स्थानिक दृष्टि से साक्षरता दर में वृद्धि जनपद में सर्वव्यापी है लेकिन शहरी केन्द्र वाले अंचलों में यह अपेक्षाकृत अधिक ज्वलंत है। शहरों से युक्त अंचलों के पड़ोसी अंचलों में भी साक्षरता का तुलनात्मक रूप से उच्चतर है। स्त्रियों की साक्षरता दर में हुयी वृद्धि का स्थानिक प्रारूप पुरूषों की साक्षरता दर में हुयी वृद्धि के स्थानिक प्रारूप जैसा ही है, जिसमें शहरी जनसंख्या से युक्त या उनके समीपस्थ अंचलों में साक्षरता दर अपेक्षाकुत अधिक बढ़ा है।

गोपालगंज जिला कुल साक्षरता की दृष्टि से अनुसूचित जातियों के लिए अत्यंत पिछड़ा है एवं यहाँ की स्थिति चिन्ताजनक है। इसमें भी महिला साक्षरता की स्थिति और भी भयावह है। गोपालगंज जिले में अनुसूचित जातियों के साक्षरता 1991 से 15.67 प्रतिशत दर्ज की गयी है जो सामान्य साक्षरता दर से कम (22. 25 प्रतिशत) है। यह दर सामान्य साक्षरता दर से काफी कम है। सभी प्रयासों के बाद यह कहा जा सकता है, कि साक्षरता की दर सामान्य से अनुसूचित जातियों का कम है। जो तालिका 4 से स्पष्ट हो रहा ळें गोपालगंज जनपद में उच्च साक्षरता दर गोपालगंज (16.17प्रतिशत), कुचायकोट (97.13 प्रतिशत), उचकागांव (17.52 प्रतिशत), हथुआ (16.34 प्रतिशत) तथा भोरे अंचल में (16.70 प्रतिशत) देखा जा रहा है।इधर हाल के वर्षों में सामान्य साक्षरता दर से अनुसूचित जातियों की साक्षरता दर की प्रतिशत अधिक देखी जा रही है, इसका कारण सामाजिक, आर्थिक एवं जमीनदारी प्रथा उन्मुलन है। जनपद में केन्द्र सरकार, राज्य सरकार एवं विभिन्न स्वयंसेवी संस्थानों के बीच शिक्षा, साक्षरता के प्रचार – प्रसार के कारण हुआ है।

तालिका – 4

गोपालगंज जिले में अनुसूचिसूचित जाति के सामान्य साक्षरता दर

अंचल	1961	1991
कटैया	4.68	15.47
विजयीपुर	6.83	15.81
भोरे	5.54	16.70
हथुआ	7.46	16.39
उचकागांव	8.60	17.52
कुचायकोट	5.03	17.15
गोपालगंज	5.42	16.17
माँझा	6.64	14.83
बरौली	4.80	13.73
बैकुण्ठपुर	4.47	13.28
गोपालगंज	5.91	15.67

गोपालगंज जिला की शिक्षा

गोपालगंज जिला की शैक्षणिक संरचना में कोठारी आयोग द्वारा अनुशांशित 10 + 2 + 3 प्रणाली निजी तथा सरकारी दोनों प्रकार के स्कूलों में लागू कर दी गयी है। दशवीं कक्षा तक शिक्षा का स्तर प्राथमिक तथा माध्यमिक है, जबकि +2 कॉलेज स्तर पर अन्तर्वर्ती कहा जाता है। इस प्रणाली में विश्वविद्यालय सतर की शिक्षा स्नातकोत्तर एवं शोध के लिए लक्षित है।

जनसंख्या की दृष्टि से शिक्षा का स्तर

प्रति विद्यालय छात्रों की संख्या जनसंख्या की दृष्टि से शिक्षा का स्तर स्पष्ट करती है। निम्न तालिका से राष्ट्रीय मानक के आलोक गोपालगंज जिले की शिक्ष का मूल्यांकन संभव है।

तालिका – 5

गोपालगंज जिला शिक्षा का जनसंख्या स्तर (प्रति विद्यालय छात्रों की संख्या)

क्र0	स्तर	राष्ट्रीय स्तर	जनपद
1	प्राथमिक	75	150
2	माध्यमिक	100	168
3	मध्यमिक उच्च माध्यमिक	150	591

तालिका के अध्ययन से स्पष्ट है कि राष्ट्रीय स्तर की तुलना में छात्रों की सेक्ष्या जिले में प्राथमिक, माध्यमिक एवं उच्च स्तर पर उच्चतर है, जो राष्ट्रीय मानक का उल्लंघन है।

छात्र – शिक्षक अनुपात

किसी भी क्षेत्र में शैक्षणिक प्रणाली की निपुणता प्रदर्शित करने के लिए छात्रों की कुल संख्या में शिक्षकों की कुल संख्या के विभाजन से प्राप्त छात्र और शिक्षकों के अनुपात से होती है। भीतीय दशा में भारत सरकार के शिक्षा आयोग (1968) द्वारा निर्धारित मानक के अनुसार उक्त अनुपात उच्च विद्यालय के लिए 1:30 तथा प्राामिक विद्यालय के लिए 1:40 – 45 निर्धारित किया गया है, यद्यपि यहाँ कोई भी निर्धारित मानक नहीं है।चन्द शेक्षणिक सिद्वांतों के अनुसार प्राथमिक तथा माध्यमिक विद्यालयों के लिए प्रति शिक्षक – छात्रों की अनुकूलतम संख्या क्रमशः 25 एवं 20 मानी गयी है। जिले के लगभग प्रत्येक ग्राम में कम से कम एक प्राथमिक विद्यालय विद्यमान है। फिर भी छात्रों की संख्या विद्यालयों में नगण्य है। यहाँ नामांकित छात्र प्रायः गरीब किसान तथाकृषक श्रमिकों के संतान हैं। क्षेत्रिय स्तर पर विालयों का समान वितरण मानकर अपेक्षाकृत छोटे

– छोटे क्षेत्र आच्छादित करने वाले विद्यालय सुगम्य कहे जा सकते हैं। इस दृष्टि से विद्यालय तक सर्वाधिक दूरी का परिकलन एक सूत्र द्वारा संभव है। r = 0.5373 A/S जिसमें r= विद्यालयों तक छात्रों द्वारा तय की गयी सर्वाधिक दूरी A = संघटक का भैगोलिक क्षेत्रफल, S = एक निश्चित स्तर पर छात्रों की संख्या तथा 0ण्5373 परिकलन के अनुसार स्थिरांक (Constant) है।

संदर्भ

1. चनदना, आर0 सी0 एण्ड सिद्धू, एम0 एस0, 1980 : इन्ट्रोडक्शन टू पोपुलेशन जियोग्राफी, देलही।
2. हैरीशन, सी0 ए0, 1964 : ह्यूमन बायोलॉजी, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, न्यूयार्क, पृ0 – 117
3. त्रिपाठी, रामदेव, 2006 : जनसंख्या भूगोल, वसुन्धरा प्रकाशन, गोरखपुर (उ0 प्र0)
4. हीरालाल, 1993 : जनसंख्या भूगोल,वसुन्धरा प्रकाशन, गोरखपुर (उ0 प्र0)
5. माम्पसन, डब्लयू एस0 1965 : पोपुलेशन प्रोब्लम, टाटा मैनग्रो हील, न्यू देलही
6. यू0 एन0 ओ0, 1980 : जनसंख्या आयोग
7. मौर्य, 2009 : जनसंख्या भूगोल, आर0 के0 बुक्स, न्यू देल्ही
8. सिंह, इन्दारा, 2007 : जनसंख्या भूगोल, आर0 के0 बुक्स, न्यू देल्ही
9. दूबे एवं सिंह, 2001 : जनसंख्या भूगोल, आर0 के0 बुक्स, न्यू देल्ही
10. सिंह, चन्द्रदीप, 2009 : पांपुलेशन ज्योग्राफी, न्यू जेनेरेशन प्रेस, राहिनी, दिल्ली